प्रेम की पुनी

रक्षा करना बंधन नही
ये भाई का दायित्व है,
कोई समझे ना समझे
प्यार भरा एक रिश्ता है,

एक उदर से जन्मे बच्चे
एक पेड़ की शाखा होते हैं,
जिस रिश्ते का कोई मोल नही
विश्वास के बल पर चलते है,

दुःख दर्द भाई बहन का
बिन कहे समझ मे आता है,
चाहे दूर कितना भी रहे
भाई बहन का साथ निभाता है,

कभी कभी आवेश में आकर
कुछ दूरियाँ बढ़ जाती है,
फिर भी आशा उन दूरियों में
सेतु का काम ही करती है,

बड़ी हो या छोटी हो
बहन बेल सी होती है,
भाई को वृक्ष समझकर
अपना अधिकार जमाती है,

भाई के सहारे ऊपर जाकर
फल फूल की वर्षा करती है,
अधिकार जमाकर लड़ लड़कर
ना प्रेम बांटने देती है,

चाहे कोई मिले न मिले
ना कभी किसी को कहती है,
भाई से देरी हो जाने पर
विचलित गमगीन हो जाती है,

इस भाई बहन के रिश्ते का
दुनिया मे कोई मोल नही,
रक्षाबंधन से बड़ा दुनिया मे
विश्वास का त्योहार नही,

दिखने में राखी एक धागा है
धागे में कोई खोट नही,
भाई बहन से बड़ा धरती पर
निस्वार्थ प्रेम का भाव नही,

सभी बहन भाइयों को रक्षाबन्धन
पर बधाइयाँ।

✍ गोपाल कृष्ण व्यास